IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

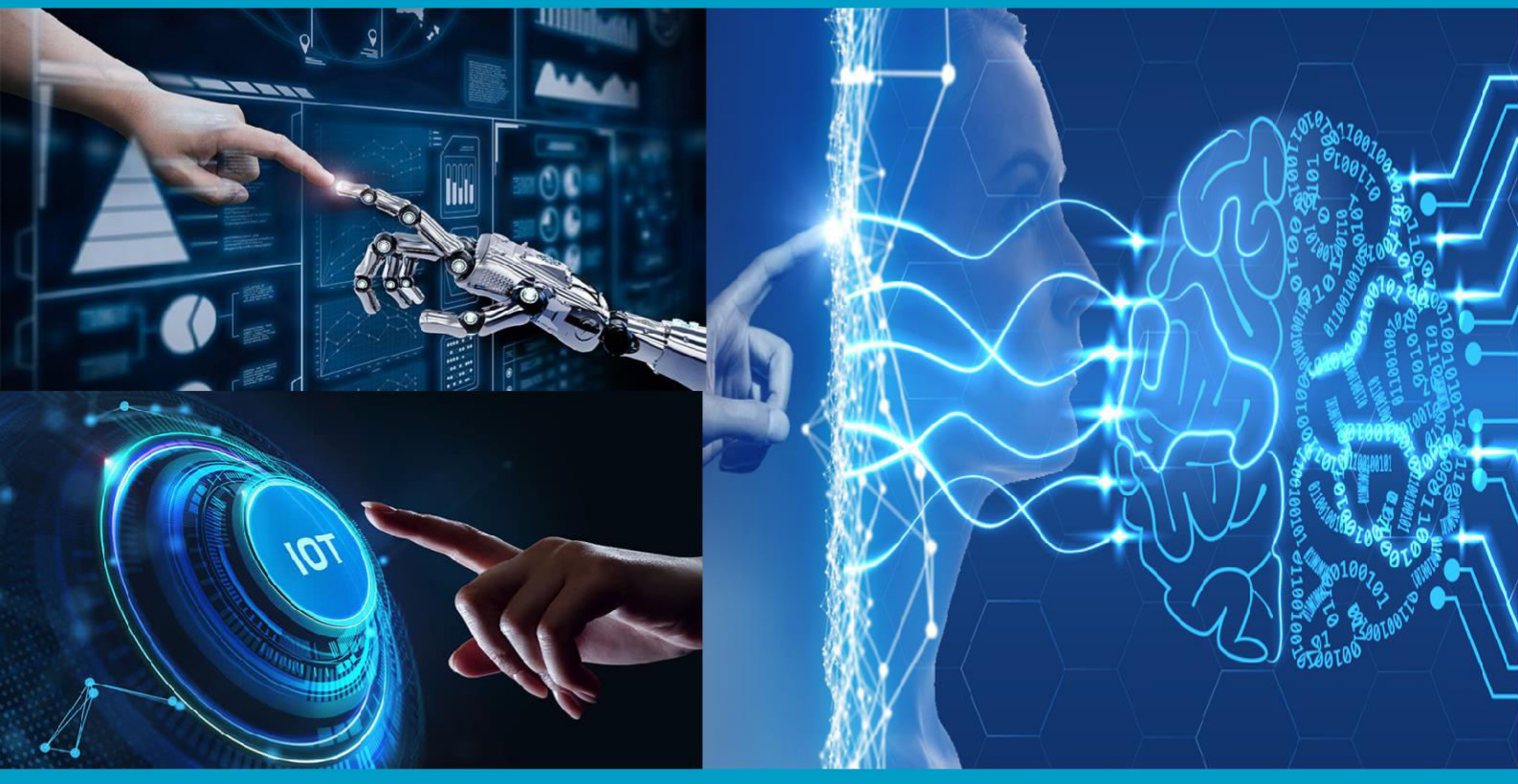

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 10, Issue 9, September 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 9, September 2023 |

बर्बरीक [खाटूश्यामजी] की तप साधना

[1]Bindu Rajput, [2]Dr. Niharika Chaturvedi

[1]Research Scholar, S.R.K. PG College, Firozabad, Uttar Pradesh, India

[2]Associate Professor, Department of Sanskrit, S.R.K. PG College, Firozabad, Uttar Pradesh, India

सार

बर्बरीक महाभारत के एक महान योद्धा थे। वे घटोत्कच और अहिलावती (मोरवी) के सबसे बड़े पुत्र थे। उनके अन्य भाई अंजनपर्व और मेघवर्ण का उल्लेख भी महाभारत में दिया गया है। बर्बरीक को उनकी माता मोरवी ने यही सिखाया था कि सदा ही पराजित पक्ष से युद्ध करना और वे इसी सिद्धान्त पर लड़ते भी रहे। बर्बरीक को कुछ ऐसी सिद्धियाँ प्राप्त थीं, जिनके बल से पलक झपते ही महाभारत के युद्ध में भाग लेनेवाले समस्त वीरों को मार सकते थे। जब वे युद्ध में सहायता देने आये, तब इनकी शक्ति का परिचय प्राप्त कर श्रीकृष्ण ने इनसे इनके शीश का दान मांग लिया था। महाभारत युद्ध की समाप्ति तक युद्ध देखने की इनकी कामना श्रीकृष्ण के वर से पूर्ण हुई और इनका कटा सिर अन्त तक युद्ध देखता और वीरगर्जन करता रहा।

कुछ कहानियों के अनुसार बर्बरीक सूर्यवर्चा नामक यक्ष थे, जिनका पुनर्जन्म एक मानव के रूप में हुआ था। बर्बरीक भीमसेन और हिडिम्बा के पोते और घटोत्कच और मौरवी के पुत्र थे। [1] इनके गुरु श्री कृष्ण थे और बर्बरीक भगवान शिव के परम भक्त थे। खाटूश्यामजी भारतीय राज्य राजस्थान के सीकर जिले का एक महत्वपूर्ण कस्बा है। यह खाटूश्यामजी के मन्दिर के लिए प्रसिद्ध है। बाबा खाटू श्याम जी का संबंध महाभारत कालीन बताया जाता है। कथाओं में खाटू श्याम मंदिर का इतिहास हजारों साल पुराना है।[1]

परिचय

हिंदू धर्म में, खाटूश्यामजी बरबरी का नाम और अभिव्यक्ति है। श्याम बाबा भी कहा जाता है, वह एक बहुत लोकप्रिय अलौकिक शक्ति है। मूल संस्कृत नाम बरबरीका को अक्सर राजस्थान में प्रतिस्थापित किया जाता है हिंदी संस्करण, बरबरीक, जिसे बारबरीक भी कहा जाता है.स्कंद पुराण में, बरबरीका , बलियादेव (IAST बरबरीका) घटोत्कच के पुत्र थे और मौरवी , दित्या मूर की बेटी, एक यादव राजा, हालांकि अन्य संदर्भ बताते हैं कि वह दक्षिण से एक योद्धा है। बारब्रीका मूल रूप से एक यक्ष था, एक आदमी के रूप में पुनर्जन्म। वह हमेशा हारने वाले पक्ष से लड़ने के अपने सिद्धांत से बंधे थे, जिसके कारण उन्होंने भाग लेने के बिना महाभारत की लड़ाई का गवाह बनने के लिए नेतृत्व किया। नेपाली संस्कृति में, किरता राजा यालाम्बर नेपाल , को बारब्रीका के रूप में चित्रित किया गया है, जबकि काठमांडू घाटी के मूल निवासी उन्हें आकाश भैरव राजस्थान में चित्रित करते हैं। , उन्हें खाटूश्यामजी के रूप में पूजा जाता है, और गुजरात में उनकी पूजा की जाती है, क्योंकि बलियादेव को महाभारत युद्ध से पहले अपने दादा की जीत सुनिश्चित करने के लिए बलिदान दिया गया माना जाता है, पांडव । उनके बलिदान के बदले में, उन्हें कृष्ण द्वारा दिए गए वरदान से विभूषित किया गया था। राजस्थान में उनकी बहुत पूजा की जाती है।बाल्यकाल से ही वे बहुत वीर और महान योद्धा थे। उन्होंने युद्ध-कला अपनी माता से सीखी। मा आदिशक्ति की तपस्या कर उन्होंने उनसे त्रिलोकों को जीतने में सक्षम धनुष प्राप्त किया साथ ही असीमित शक्तियों को भी अर्जित कर लिया तत्पश्चात् अपने गुरु श्रीकृष्ण की आज्ञा से उन्होंने कई वर्षों तक महादेव की घोर तपस्या करके उन्हें प्रसन्न किया और भगवान शिव शंकर से तीन अभेद्य बाण प्राप्त किए और 'तीन बाणधारी' का प्रसिद्ध नाम प्राप्त किया।[1,2,3]

अन्य नाम

बारबेरिका: खाटूश्याम के बचपन का नाम बारबेरिका था। उनकी माँ और रिश्तेदार उन्हें कृष्ण द्वारा दिए गए श्याम नाम से पहले इस नाम से पुकारते थे।

शीश के दानी: सचमुच: "सिर के दाता"; उपरोक्त कथा के अनुसार।

हरे का सहारा: सचमुच: "पराजित का समर्थन"; अपनी माँ की सलाह पर, बर्बरीक ने समर्थन करने का संकल्प लिया कि जिसके पास भी कम शक्ति है और वह हार रहा है। इसलिए उन्हें इस नाम से जाना जाता है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 9, September 2023 |

किशोर बाण धारी: सचमुच: "तीन तीरों का वाहक"; संदर्भ तीन अचूक बाणों का है जो उन्हें भगवान से वरदान के रूप में मिला था शिव । ये तीर पूरी दुनिया को तबाह करने के लिए पर्याप्त थे। इन तीनों तीरों के नीचे लिखा शीर्षक है, मैम सेव्यम परजीत।

लाखा-दतारी: सचमुच: "द म्यूनिफ़र गिवर"; जो कभी भी अपने भक्तों को जो कुछ भी उनकी आवश्यकता है और मांगने में संकोच नहीं करता है।

लीला के असवार: सचमुच: "लीला का सवार"; उनके नीले रंग के घोड़े का नाम होने के नाते। कई लोग इसे नीला घोड़ा या "नीला घोड़ा" कहते हैं।

खाटू नरेश: शाब्दिक: "द किंग ऑफ़ खाटू "; जो खाटू और पूरे ब्रह्मांड पर शासन करता है।

कलयुग के अवतार: शाब्दिक: "भगवान का कलियुग "; कृष्ण के अनुसार वह भगवान होंगे जो कलियुग के युग में अच्छे लोगों को बचाएंगे।[7,8,9]

श्याम प्यारे: शाब्दिक: "जो भगवान सभी से प्यार करते हैं और उनसे प्यार करते हैं, भक्त और भवान के बीच आध्यात्मिक संबंध। nishkaam pyaar / prem "

बलिया देव: शाब्दिक अर्थ:" सुपर पावर वाले देव, नवोदित बच्चों को वासना, अहमदाबाद, गुजरात में स्थित मंदिर में आशीर्वाद दिया जाता है।

मोर्चेदीधिप्रकाश : सचमुच: " मोर के पंखों से बनी छड़ी के वाहक "

श्याम बाबा

बरिश के देवता: शाब्दिक:" बारिश के देवता "; जो अपनी इच्छा के अनुसार बारिश को नियंत्रित करता है। <114 पर कमरुनाग मंदिर में प्रचलित नाम।मंडी , हिमाचल प्रदेश .

यालाम्बर

महाभारत का युद्ध कौरवों और पाण्डवों के मध्य अपरिहार्य हो गया था, अतः यह समाचार बर्बरीक को प्राप्त हुआ तो उनकी भी युद्ध में सम्मिलित होने की इच्छा जागृत हुई। जब वे अपनी माता से आशीर्वाद प्राप्त करने पहुँचे तब माँ को हारे हुए पक्ष का साथ देने का वचन दिया। वे अपने लीले घोड़े, जिसका रङ्ग नीला था, पर तीन बाण और धनुष के साथ कुरूक्षेत्र की रणभूमि की ओर अग्रसर हुए।

सर्वव्यापी श्रीकृष्ण ने ब्राह्मण वेश धारण कर बर्बरीक से परिचित होने के लिए उन्हें रोका और यह जानकर उनकी हँसी भी उड़ायी कि वह मात्र तीन बाण से युद्ध में सम्मिलित होने आया है। ऐसा सुनने पर बर्बरीक ने उत्तर दिया कि मात्र एक बाण शत्रु सेना को परास्त करने के लिये पर्याप्त है और ऐसा करने के बाद बाण वापस तरकस में ही आएगा। यदि तीनों बाणों को प्रयोग में लिया गया तो तीनों लोकों में हाहाकार मच जाएगा। इस पर श्रीकृष्ण ने उन्हें चुनौती दी कि इस पीपल के पेड़ के सभी पत्रों को छेदकर दिखलाओ, जिसके नीचे दोनो खड़े थे। बर्बरीक ने चुनौती स्वीकार की और अपने तुणीर से एक बाण निकाला और ईश्वर को स्मरण कर बाण पेड़ के पत्तों की ओर चलाया।

तीर ने क्षण भर में पेड़ के सभी पत्तों को भेद दिया और श्रीकृष्ण के पैर के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने लगा, क्योंकि एक पत्ता उन्होंने अपने पैर के नीचे छुपा लिया था, बर्बरीक ने कहा कि आप अपने पैर को हटा लीजिए वरना ये आपके पैर को चोट पहुँचा देगा। श्रीकृष्ण ने बालक बर्बरीक से पूछा कि वह युद्ध में किस ओर से सम्मिलित होगा तो बर्बरीक ने अपनी माँ को दिये वचन दोहराया कि वह युद्ध में उस ओर से भाग लेगा जिस ओर की सेना निर्बल हो और हार की ओर अग्रसर हो। श्रीकृष्ण जानते थे कि युद्ध में हार तो कौरवों की ही निश्चित है और इस पर अगर बर्बरीक ने उनका साथ दिया तो परिणाम उनके पक्ष में ही होगा।[10,11,12]

ब्राह्मण वेश में श्रीकृष्ण ने बालक से दान की अभिलाषा व्यक्त की, इस पर वीर बर्बरीक ने उन्हें वचन दिया कि अगर वो उनकी अभिलाषा पूर्ण करने में समर्थ होगा तो अवश्य करेगा। श्रीकृष्ण ने उनसे शीश का दान मांगा। बालक बर्बरीक क्षण भर के लिए चकरा गया, परन्तु उसने अपने वचन की दृढ़ता जतायी। बालक बर्बरीक ने ब्राह्मण से अपने वास्तिवक रूप से अवगत कराने की प्रार्थना की और श्रीकृष्ण के बारे में सुनकर बालक ने उनके विराट रूप के दर्शन की अभिलाषा व्यक्त की, श्रीकृष्ण ने उन्हें अपना विराट रूप दिखाया।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 9, September 2023 |

उन्होंने बर्बरीक को समझाया कि युद्ध आरम्भ होने से पहले युद्धभूमि की पूजा के लिए एक वीरवर क्षत्रिए के शीश के दान की आवश्यकता होती है, उन्होंने बर्बरीक को युद्ध में सबसे वीर की उपाधि से अलंकृत किया, अतएव उनका शीश दान में मांगा। बर्बरीक ने उनसे प्रार्थना की कि वह अंत तक युद्ध देखना चाहता है, श्रीकृष्ण ने उनकी यह बात स्वीकार कर ली। फाल्गुन माह की द्वादशी को उन्होंने अपने शीश का दान दिया। उनका सिर युद्धभूमि के समीप ही एक पहाड़ी पर सुशोभित किया गया, जहाँ से बर्बरीक सम्पूर्ण युद्ध का जायजा ले सकते थे।

युद्ध की समाप्ति पर पांडवों में ही आपसी बहस होने लगी कि युद्ध में विजय का श्रेय किसको जाता है, इस पर श्रीकृष्ण ने उन्हें सुझाव दिया कि बर्बरीक का शीश सम्पूर्ण युद्ध का साक्षी है, अतएव उससे बेहतर निर्णायक भला कौन हो सकता है? सभी इस बात से सहमत हो गये। बर्बरीक के शीश ने उत्तर दिया कि श्रीकृष्ण ही युद्ध में विजय प्राप्त कराने में सबसे महान कार्य किया है। उनकी शिक्षा, उनकी उपस्थिति, उनकी युद्धनीति ही निर्णायक थी। उन्हें युद्धभूमि में सिर्फ उनका सुदर्शन चक्र घूमता हुआ दिखायी दे रहा था जो कि शत्रु सेना को काट रहा था। यह सुनकर श्री कृष्ण ने बर्बरीक को वर दिया और कहा कि तुम मेरे श्याम नाम से पूजे जाओगे खाटू नामक ग्राम में प्रकट होने के कारण खाटू श्याम के नाम से प्रसिद्धि पाओगे और मेरी सभी सोलह कलाएं तुम्हारे शीश में स्थापित होंगी और तुम मेरे ही प्रतिरूप बनकर पूजे जाओगे।

विचार-विमर्श

कलयुग में अपने भक्तो की हर मनोकामना पूरी करने वाले देव कलयुग के अवतारी सभी भक्तो के प्रिय खाटू श्याम बाबा कलयुग के अवतारी और हारे के सहारे कहलाते है, महाभारत काल में श्याम बाबा बर्बरीक के रूप में थे बर्बरीक महाबली भीम के पुत्र घटोत्कच के पुत्र थे बर्बरीक की माता का मौरवी है । बर्बरीक को शिव के वरदान से तीन अमोक बाण मिले थे और उन्होंने अपनी माता को वचन दिया था की वो हारने वाले का साथ देंगे श्री कृष्ण को यह डर था की जब कौरव हारने लगेंगे तो बर्बरीक निश्चित रूप से उन्ही का साथ देंगे और बर्बरीक के तीन बाणों का सामना करना किसी के भी बस का नहीं था तब भगवान श्री कृष्ण ने बर्बरीक से उसका शीश दान में मांग लिया और उसी समय हमारे प्यारे खाटू श्याम बाबा ने जो उस समय बर्बरीक के रूप में थे श्री कृष्ण द्वारा उनके शीश के दान का कहने से पल भर में अपना शीश हँसते- हँसते अपने ही हाथो से काटकर श्री कृष्ण को सौप दिया ।[8,9,10]

बर्बरीक के इस प्रकार शीश के दान करने पर श्री कृष्ण बहुत प्रसन्न हुए और बर्बरीक को वरदान दिया की पूरी दुनिया उन्हें कलयुग में बर्बरीक को उनके श्याम नाम से जानेगी और घर घर में उनकी श्याम नाम से पूजा होगी अपने भक्तो के कष्ट हरण के लिए भगवान श्री कृष्ण ने बर्बरीक के शीश को अजर अमर हो जाने का भी वरदान देते हुए अपनी सारी शक्तियाँ बर्बरीक के शीश को दे दी ।
भगवान श्री कृष्ण ने बर्बरीक के शीश को कलयुग में अवतरित होने का वरदान दिया और कहाँ जैसे-जैसे कलियुग बढ़ता जाएगा तुम श्याम के नाम से पूजे जाओगे जो भी भक्त सच्चे दिल केवल तुम्हारे नाम का उच्चारण करेग तुम्हारी सच्चे मन और प्रेम-भाव से पूजा करेंगे तो उनकी सभी मनोकामना पूर्ण होगी और तुम लखदातर कहलाओगे ।
कृष्ण ने कहा कि वह बर्बरीक को क्षत्रियों में सबसे बहादुर मानते थे, और इसलिए दान में उसका सिर मांग रहे थे। अपने वचन की पूर्ति में, और कृष्ण की आज्ञा के अनुपालन में, बर्बरीक ने अपना सिर दान में दे दिया। यह फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष (उज्ज्वल आधा) के 12 वें दिन मंगलवार को हुआ। बर्बरीक अपने पूर्व जन्म में यक्ष था। एक बार भगवान ब्रह्मा और कई अन्य देवता वैकुंठ पर आए और भगवान विष्णु से शिकायत की कि पृथ्वी पर अधर्म बढ़ रहा था; दुष्ट लोगों द्वारा यातनाएँ सहन करना उनके लिए संभव नहीं था। इसलिए वे उन्हें जाँचने के लिए भगवान विष्णु की मदद लेने आए। भगवान विष्णु ने देवों से कहा कि वह जल्द ही एक इंसान के रूप में पृथ्वी पर अवतरित होंगे और सभी बुरी शक्तियों को नष्ट कर देंगे। तब, एक यक्ष ने देवों से कहा कि वह अकेले ही पृथ्वी पर सभी बुरे तत्वों को मारने के लिए पर्याप्त है, और भगवान विष्णु के लिए पृथ्वी पर उतरना आवश्यक नहीं था। इससे भगवान ब्रह्मा को बहुत दुख हुआ। भगवान ब्रह्मा ने इस यक्ष को शाप दिया कि जब भी पृथ्वी पर सभी बुरी ताकतों को खत्म करने का समय आएगा, तब भगवान विष्णु सबसे पहले उसे मारेंगे। बाद में, यक्ष बर्बरीक के रूप में जन्म लेता है और भगवान कृष्ण इस शाप के परिणामस्वरूप दान में अपना सिर चाहते हैं। उस दिन के बाद से मानव बर्बरीक खाटू श्याम बन जाता है, बर्बरीक द्वारा भगवान कृष्ण के साक्षी को अपना सिर दिया गया था और भगवान कृष्ण स्वयं उसके दिल में प्रकट हुए थे।

युद्ध का गवाह
खुद को मृत घोषित करने से पहले, बर्बरीक ने कृष्ण को आगामी लड़ाई को देखने की अपनी महान इच्छा के बारे में बताया और उनसे सुविधा प्रदान करने का अनुरोध किया। कृष्ण सहमत हो गए और युद्ध के मैदान को देखने के लिए पहाड़ी की चोटी पर सिर रख दिया। पहाड़ी से, बर्बरीक का सिर पूरी लड़ाई को देखता था।

लड़ाई के अंत में, विजयी पांडव भाइयों ने आपस में यह तर्क दिया कि उनकी जीत के लिए कौन जिम्मेदार था। कृष्ण ने सुझाव दिया कि बर्बरीक का सिर, जिसने पूरी लड़ाई को देखा था उसे न्याय करने की अनुमति दी जानी चाहिए। बर्बरीक के सिर ने सुझाव दिया कि यह कृष्ण अकेले थे जो जीत के लिए जिम्मेदार थे। बर्बरीक जवाब देता है, "मैं देख सकता था कि दो चीजें थीं। एक, एक दिव्य चक्र युद्ध के मैदान के चारों ओर घूमता है, उन सभी को मारता है जो धर्म के पक्ष में नहीं थे। दूसरा था द्रौपदी जिन्होंने देवी का मूल रूप महाकाली लिया है, जिन्होंने युद्ध के मैदान में अपनी जीभ फैला दी और सभी पापियों को उनके बलिदान के रूप में भस्म कर

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 9, September 2023 |

दिया "। यह सुनकर। पांडव ने महसूस किया कि यह भगवान नारायण और देवी पार्वती (महाकाली) थे जिन्होंने वास्तव में धर्म से दुनिया की सफाई की, और पांडव केवल साधन थे। युद्ध के बाद। बर्बरीक का सिर उसके शरीर के साथ जुड़ गया और उसने शांति बनाए रखने के लिए पूरी दुनिया को बताने के लिए उस स्थान को छोड़ दिया।[7,8,9]

उनका दूसरा नाम भगवान कमरुनाग है और उन्हें हिमाचल प्रदेश के जिला मंडी में प्रमुख देवता के रूप में पूजा जाता है। तालाब और एक मंदिर सुंदरनगर, जिला मंडी में कामरू पहाड़ी में स्थित है। उन्होंने पहाड़ी से कुरुक्षेत्र की पूरी लड़ाई देखी, जिसे अब खाटू में स्थित खाटूश्याम मंदिर के रूप में जाना जाता है। सीकर जिला , राजस्थान । बलियादेव का एक प्रभावशाली और विशेष रूप से पवित्र मंदिर, बर्बरीक गांव में स्थित है लम्हा में अहमदाबाद जिला , गुजरात .

अवलोकन और त्योहार
बर्बरीक को श्याम के रूप में पूजा जाता है, वे भगवान श्रीकृष्ण के सर्वोच्च व्यक्तित्व नहीं हैं। या कृष्ण का कोई अवतार लेकिन शायद कृष्ण का बहुत बड़ा भक्त माना जाता है। और चूँकि कृष्ण के भक्त की महिमा कृष्ण से अधिक है, इसलिए लोग स्वयं खाटूश्याम की भी पूजा करते हैं। इसलिए, उत्सव का स्वाद कृष्ण के चंचल और जीवंत स्वभाव को दर्शाता है। मंदिर में कृष्ण जन्माष्टमी , झूल झूलनी एकादशी, होली और वसंत पंचमी के त्योहार मंदिर में धूम-धाम से मनाए जाते हैं। नीचे दिया गया फाल्गुन मेला प्रमुख वार्षिक उत्सव है।

लाखों श्रद्धालु हर दिन मंदिर आते हैं। नवविवाहित जोड़े श्रद्धांजलि देने के लिए आते हैं और नवजात शिशुओं को उनके मुंडन (पहले बाल काटने) समारोह के लिए मंदिर में लाया जाता है। मंदिर में पांच बार एक विस्तृत आरती की जाती है। ये हैं:

मंगला आरती: मंदिर के खुले होने पर सुबह-सुबह की गई।
श्रृंगार आरती: बाबा श्याम के श्रृंगार के समय की गई। इस आरती के लिए मूर्ति को भव्य रूप से अलंकृत किया जाता है।
भोग आरती: दोपहर के समय की जाती है जब भोग (प्रसादम) भगवान को परोसा जाता है।
संध्या आरती: में किया जाता है। संध्या, सूर्यास्त के समय।
दो विशेष भजन, "श्री श्याम आरती" और "श्री श्याम विनती", इन सभी अवसरों पर गाए जाते हैं। श्याम मंत्र भगवान के नामों का एक और प्रज्जवलन है जो भक्तों द्वारा गाया जाता है।

अन्य विशेष प्रेक्षणों में शामिल हैं:

शुक्ल एकादशी और द्वादशी: हिंदू कैलेंडर में हर महीने के उज्ज्वल महीने की 11 वीं और 12 वीं तारीखें मंदिर के लिए विशेष महत्व रखती हैं। इसका कारण यह है कि बर्बरीक का जन्म कार्तिका के महीने के 11 वें दिन हुआ था, और उन्होंने फाल्गुन माह के 12 वें दिन कृष्ण को अपना सिर (शीश) दान किया था मंगलवार। इन दो दिनों में दर्शन करना शुभ माना जाता है और हर महीने हजारों की तादाद में भक्त आते हैं। इन दिनों के बीच में रात भर मंदिर खुला रहता है। रात-रात भजन सत्र आयोजित किए जाते हैं क्योंकि भक्त पारंपरिक रूप से प्रभु के भजन गाने में रात गुजारते हैं। भक्त भजन कार्यक्रम आयोजित करते हैं और भजन गायकों को भक्ति गीत गाने के लिए आमंत्रित करते हैं।[5,7,8]

श्याम कुंड में स्नान: यह मंदिर के पास का पवित्र तालाब है जहाँ से मूर्ति को पुनः प्राप्त किया गया था। ऐसा माना जाता है कि इस तालाब में डुबकी लगाने से व्यक्ति बीमारियाँ दूर करता है और अच्छी सेहत प्राप्त करता है। भक्ति भाव से परिपूर्ण, लोग श्याम कुंड में अनुष्ठान करते हैं। उनका मानना है कि इससे उन्हें बीमारियों और छूत से राहत मिलेगी। वार्षिक फाल्गुन मेला उत्सव के दौरान स्नान करना विशेष रूप से नमकीन माना जाता है।

निशान यात्रा: ऐसा माना जाता है कि अगर आप मंदिर में निशान चढ़ाते हैं तो आपकी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। एक निशान एक विशेष आकार का त्रिकोणीय झंडा होता है, जो कपड़े से बना होता है, जिसे बांस की छड़ी पर फहराया जाता है। यह रिंगस शहर से खाटू (17 किमी) पर (नंगे) पैदल मार्ग को कवर करते समय किसी के हाथों में ले जाया जाता है। फाल्गुन मेले के दौरान लाखों में निशानों की पेशकश की जाती है।

फाल्गुन मेला : मंदिर से जुड़ा सबसे महत्वपूर्ण त्योहार फाल्गुन मेला है, जो होली के त्योहार से सिर्फ 8-9 दिन पहले होता है। हिंदू 39 महीने के फाल्गुन के उज्ज्वल आधे के 11 वें दिन, फाल्गुन शुक्ल एकादशी पर बर्बरीक का सिर दिखाई दिया। इसलिए, मेले का आयोजन उस महीने की 9 वीं से 12 वीं तारीख तक किया जाता है। मेला अब फाल्गुन मास के उज्ज्वल आधे के लगभग 12-15 दिनों तक बढ़ा दिया गया है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 9, September 2023 |

खाटूश्यामजी रथ की मूर्ति के दौरान पद यात्रा कोटा से 2008 में खाटूश्यामजी तक <
इस पवित्र अवसर पर पूरे देश में तीर्थयात्री यहां निसान <83 पर पैदल आते हैं।(पवित्र चिह्न - झंडे) उनके हाथों में। लोग श्याम भजन और विभिन्न संगीत वाद्ययंत्र बजाकर अपनी पवित्र यात्रा का आनंद लेते हैं। वे गुलाल के साथ होली खेलकर यात्रा का आनंद लेते हैं। कई श्याम भक्त टेंट की छाया में पैदल यात्रियों को भोजन की आपूर्ति करते हैं। वे पूरे उत्साह के साथ अपनी यात्रा को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित भी करते हैं। वे इस अवसर पर खाटूश्यामजी के विवाह का आनंद लेते हैं। लोग विभिन्न चीजों को खरीदकर mela का आनंद लेते हैं। द्वादशी (= महीने का 12 वां दिन) पर, भोग को बाबा के - प्रसादी खीर ,—— के रूप में तैयार किया जा रहा है।

भीड़ को नियंत्रित करने के लिए सुरक्षा के विशेष इंतजाम किए जाते हैं। इस छोटे से गाँव में पवित्र मेला के तीन दिनों में लगभग 500,000 लोग आते हैं। बाबा श्याम की मूर्ति को संक्षिप्त रूप से देखने के लिए, 2 किलोमीटर (1.2 मील) के आसपास बांस बाड़ की मदद से बहुत कड़ी सुरक्षा की जाती है।[9,10]

परिणाम

भीम के पौत्र बर्बरीक द्वारा अपने शीश का दान फाल्गुन शुक्ल पक्ष की बाहरस के दिन किया गया था इसलिए फाल्गुन मास की बाहरस सबसे खास मानी जाती है राजस्थान के सीकर जिले में एक छोटी सी नगरी है खाटू नगरी और इसी खाटू नगरी में शीश के दानी का सबसे प्रसिद्ध और सबसे चमत्कारी मंदिर है जहाँ बाबा श्याम के दर्शन करने मात्र से बाबा से नजर मिलते ही भक्तो की सभी मनोकामना पूर्ण होने लगती है ।

तो खाटू में यह मंदिर कैसे बना कैसे बाबा श्याम का शीश अवतरित हुआ या प्रकट हुआ इसकी एक पौराणिक कहानी है
खाटू नगरी में एक बहुत ही पवित्र कुंड है जिसे श्याम कुंड कहते है श्याम कुंड के बारे में कहते है की इसी कुंड में श्याम बाबा का शीश अवतरित हुआ था यही पर श्याम कुंड में ही बाबा श्याम का शीश जो महभारत काल में श्री कृष्ण ने बर्बरीक से दान में ले लिया था भगवान श्री कृष्ण के वरदान के कारण बर्बरीक का वही शीश राजस्थान के खाटू नगरी की पवित्र धरती पर प्रकट हुआ, खाटू में जहाँ यह शीश प्रकट हुआ उसी स्थान को श्याम कुंड के नाम से जाना जाता है । कहते है की श्याम कुंड में डुबकी लगाने से व्यक्ति के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और श्याम बाबा का आशीर्वाद प्राप्त होता है।
एक प्राचीन कहानी के अनुसार खाटू नगरी में राजा खटवान का राज हुआ करता था उस समय श्याम कुंड के स्थान पर के यहाँ एक बड़ा सा रेत का टीला था उस टीले के आस पास कुछ गायें चरने के लिए आया करती थी, उसी टीले के ऊपर एक आंक यानी आंकड़े का पौधा भी था तो गाये वहां चरने आती शाम को उनका मालिक उन्हें वापिस घर ले जाता उनमें से एक गाय टीले के पास आकर एक स्थान पर शांत भाव से खड़ी हो जाती और फिर उसके थनों से स्वतः ही दूध निकलने लगता जब वो गाय शाम को अपने मालिक के घर जाती और उसका मालिक जब उसका दूध निकलता तो दूध ही नहीं आता ऐसा कई दिनों तक हुआ तो एक दिन उस गाय के मालिक ने देखा की इस गाय का दूध कहाँ जा है इसका पता करना पड़ेगा की आखिर यह गाय दूध क्यों नहीं दे रही ऐसा तो नहीं है की कोई रास्ते में ही इसका दूध चोरी कर रहा है तो अगले ही दिन उस गाय के मालिक ने उस गाय का पीछा करना शुरू कर दिया तो क्या देखा की वो गाय उस टीले पर शांत भाव से खड़ी है और उसका दूध अपने ही निकल रहा है पास आकर देखा तो दूध जमीन के अंदर जा रहा था मानो कोई इस गाय का दूध पीये जा रहा हो ।

अब वो गाय का मालिक रोज इस प्रक्रिया को देखता । उसे इस बात का आश्चर्य हुआ की गाय उस स्थान पर जाते ही कैसे दूध देने लगती हैं अब उसे समझ नहीं आ रहा था की वो करे भी तो क्या करे उसे लगा की कोई भुत प्रेत का चक्कर है या फिर कुछ और ही तो घबराया हुआ गाय का मालिक खाटू नगरी के राजा के पास गया जब उसने वहां के राजा को यह बात बताई तो राजा ने सोचा यह कोई पागल है राजा और उसकी सभा में किसी को भी इस बात पर जरा भी विश्वास नहीं हुआ सभी ने सोचा यह व्यक्ति पागल है बहकी बहकी बाते कर रहा है भला ऐसा भी कही होता है लेकिन जब उसने कई बार बार-बार राजा से कहा की राजाजी आप स्वयम एक बार खुद चलकर देख लीजिये तब राजा को भी जिज्ञासा हुयी राजा भी यह जानना चाहता था की आखिर उसकी बात में कितनी सच्चाई है तो राजा ने अपने साथ अपने कुछ लोगो को कुछ मंत्रियो को साथ लिया और चल पड़े जब राजा ने देखा की गाय उस टीले पर खड़ी होकर अपने आप ही किसी को दूध पिला रही है तो राजा और राजा के साथ आये लोगो का भी सर चकराया, वो बोले ये क्या है? यह गाय का मालिक तो सही बोल रहा है यह पागल नहीं है यह तो सच है गाय अपने आप ही दूध दे रही है तब राजा ने कहा इस टीले के नीचे क्या है पता करो इसकी खुदाई करो ।
तब कुछ मजदूरो ने उस जगह पर राजा के सामने ही खोदना शुरू किया लेकिन जैसे ही जमीन पर पहली कुदाली पड़ी वैसे ही वहा जमीन के भीतर से आवाज आई, अरे धीरे धीरे खोदो, यहाँ मेरा शीश है जमीन के भीतर से आवाज सुनकर सारे मजदूर डर कर भाग खड़े हुए अब राजा भी परेशान होकर अपने महल में चला गया ।
उसी रात्रि राजा को स्वपन आया सपने में खाटूश्याम बाबा ने राजा को साक्षात दर्शन देकर कहा की हे राजन अब समय आ गया है मेरे शीश के अवतरित होने का मैं महाभारत काल में वीर बर्बरीक था और मेरे द्वारा भगवान श्री कृष्णा को अपना शीश दान में दिया दिया तभी उनसे मुझे कलियुग में पूजित होने का वरदान मिला था इस टीले के नीचे मेरा शीश है तुम स्वयं यहाँ धीर-धीरे खुदाई करो और यहाँ से मेरा शीश निकालो और इस शीश को अपनी इस पवित्र नगरी खाटू में मेरा मंदिर बना स्थापित करो ।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 9, September 2023 |

सुबह जब राजा उठा तो तो स्वपन की बात को ध्यान रखकर राजा स्वयं उस टीले पर जाकर धीरे धीरे खुदाई करना शुरू किया जब उस स्थान की मिटटी को हटाया गया तो वहां पर श्री श्याम बाबा का शीश निकला जहाँ वो शीश निकला वहां एक कुंड बनाया गया जिसे आज श्याम कुंड के नाम से पुकारा जाता है।
बरबरीका उर्फ खाटूश्यामजी बलियादेव उर्फ श्याम भीम के पोते थे। (पांडव भाइयों में से दूसरे), और घटोत्कच के पुत्र। घटोत्कच भीम और हिडिम्बा के पुत्र थे। बचपन में, बर्बरीक एक बहुत बहादुर योद्धा था या। उन्होंने अपनी मां से युद्ध कला सीखी। देवताओं (अष्टदेव) ने उन्हें तीन अचूक बाण दिए। इसलिए, बारबेरिका को "तीन तीर के वाहक" के रूप में जाना जाने लगा। जब बर्बरीक को पता चला कि पांडवों और कौरवों के बीच युद्ध अपरिहार्य हो गया है, तो वह यह देखना चाहता था कि महाभारत युद्ध क्या था। उसने अपनी मां से वादा किया कि अगर उसे लड़ाई में भाग लेने का आग्रह महसूस होता है, तो वह उस पक्ष में शामिल हो जाएगा जो हार जाएगा। वह अपने तीन तीरों और धनुषों से सुसज्जित अपने ब्लू हॉर्स पर मैदान में सवार हुआ।[1,2,3]

महाभारत युद्ध शुरू होने से पहले, भगवान कृष्ण ने सभी योद्धाओं से पूछा कि उन्हें महाभारत युद्ध को अकेले खत्म करने में कितने दिन लगेंगे। भीष्म ने उत्तर दिया कि उन्हें युद्ध समाप्त करने में 20 दिन लगेंगे। द्रोणाचार्य ने उत्तर दिया कि उसे 25 दिन लगेंगे। जब कर्ण से पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि उन्हें 24 दिन लगेंगे। अर्जुन ने कृष्ण से कहा कि उन्हें स्वयं युद्ध पूरा करने में 28 दिन लगेंगे। इस प्रकार, भगवान कृष्ण ने प्रत्येक योद्धा से पूछा और एक उत्तर प्राप्त किया।

कृष्ण ने ब्राह्मण के रूप में प्रच्छन्न किया, अपनी ताकत की जांच करने के लिए बर्बरीक को रोक दिया। यह पूछे जाने पर कि युद्ध को खत्म करने में उन्हें कितने दिन लगेंगे, बर्बरीक ने जवाब दिया कि वह इसे एक मिनट में समाप्त कर सकते हैं। तब कृष्ण ने बर्बरीक से पूछा कि कैसे वह सिर्फ तीन बाणों से महान युद्ध को समाप्त करेगा। बारबिका ने उत्तर दिया कि युद्ध में अपने सभी विरोधियों को नष्ट करने के लिए एक ही तीर पर्याप्त था, और फिर वह अपने तरकश में लौट आएगा। उन्होंने कहा कि, पहले तीर का उपयोग उन सभी चीजों को चिह्नित करने के लिए किया जाता है जिन्हें वह नष्ट करना चाहता है। यदि वह दूसरे तीर का उपयोग करता है, तो दूसरा तीर उन सभी चीजों को चिह्नित करेगा जिन्हें वह बचाना चाहता है। तीसरे तीर का उपयोग करने पर, यह उन सभी चीजों को नष्ट कर देगा जो चिह्नित नहीं हैं और फिर अपने तरकश में वापस आ जाते हैं। दूसरे शब्दों में, एक तीर से वह अपने सभी लक्ष्यों को ठीक कर सकता है और दूसरे के साथ वह उन्हें नष्ट कर सकता है।

कृष्ण ने तब उसे चुनौती दी कि वह पीपल के पेड़ के सभी पत्तों को बाँध दे, जिसके नीचे वह खड़ा था, अपने तीरों का उपयोग करके। । बर्बरीक बलियादेव चुनौती स्वीकार करता है और अपनी आँखें बंद करके अपने तीर छोड़ने के लिए ध्यान करना शुरू कर देता है। जैसे ही बर्बरीक ध्यान करने लगता है, कृष्ण चुपचाप पेड़ से एक पत्ता तोड़ते हैं और उसे अपने पैर के नीचे छुपा लेते हैं। जब बर्बरीक अपना पहला तीर छोड़ता है, तो यह पेड़ के सभी पत्तों को चिह्नित करता है और अंत में कृष्ण के पैर के चारों ओर मंडराने लगता है। कृष्ण बर्बरीक से पूछते हैं कि तीर उसके पैर पर क्यों मंडरा रहा था। बर्बरीक जवाब देता है कि उसके पैर के नीचे एक पत्ता होना चाहिए और तीर उसके पैर को निशाना बना रहा था जो नीचे छिपी हुई पत्ती को चिह्नित करने के लिए था। बर्बरीक ने कृष्ण को पैर उठाने की सलाह दी, अन्यथा बाण कृष्ण के पैर को छेदकर पत्ती को चिह्नित कर देता। कृष्ण फिर अपना पैर उठाते हैं और पहले तीर में छिपी हुई पत्ती को भी अंकित करते हैं। तीसरा तीर फिर सभी पत्तियों (छिपे हुए पत्ते सहित) को इकट्ठा करता है और उन्हें एक साथ जोड़ता है। इसके द्वारा कृष्ण ने निष्कर्ष निकाला कि तीर इतने शक्तिशाली और अचूक हैं, कि भले ही बर्बरीक अपने लक्ष्यों के ठिकाने से अनभिज्ञ हो, उसके तीर अभी भी अपने इच्छित लक्ष्यों को नेविगेट और ट्रेस कर सकते हैं। इस घटना का नैतिक यह है कि, एक वास्तविक युद्ध के मैदान में, अगर कृष्ण किसी को अलग करना चाहते हैं (उदाहरण के लिए: 5 पांडव भाई) और उन्हें कहीं और छुपाने के लिए उन्हें बर्बरिका का शिकार होने से बचाने के लिए, वह सफल नहीं होगा। तीर छिपे हुए लक्ष्यों को भी खोज सकते थे और उन्हें नष्ट कर सकते थे। इसलिए, कोई भी इन तीरों से बच नहीं पाएगा। इस प्रकार कृष्ण को बर्बरीक की अभूतपूर्व शक्ति के बारे में गहन जानकारी प्राप्त हुई।[3,5,8]

कृष्ण फिर उस लड़के से पूछते हैं जिसे वह युद्ध में पसंद करेगा। बर्बरीक ने खुलासा किया कि वह जो भी कमजोर है, उसके लिए लड़ने का इरादा रखता है। कौरवों के ग्यारह की तुलना में पांडवों के पास केवल सात अक्षयवाहिनी सेनाएं हैं, वह मानते हैं कि पांडव अपेक्षाकृत कमजोर पक्ष हैं और इसलिए उनका समर्थन करना चाहते हैं। लेकिन कृष्ण उससे पूछते हैं, अगर उसने गंभीरता से परिणामों के बारे में सोचा था, तो अपनी माँ को इस तरह का शब्द देने से पहले (कमजोर पक्ष का समर्थन करने के बारे में)। बर्बरीक ने माना कि अपेक्षाकृत कमजोर पांडव पक्ष को उनका समर्थन, उन्हें विजयी बना देगा। लेकिन, कृष्ण ने अपनी माँ को उनके वचन के वास्तविक परिणामों को प्रकट किया:

कृष्ण बताते हैं कि जो भी पक्ष उनका समर्थन करेगा वह उनकी शक्ति के कारण दूसरे पक्ष को कमजोर बना देगा। कोई भी उसे हरा नहीं पाएगा। इसलिए, चूंकि वह दूसरे पक्ष का समर्थन करने के लिए मजबूर हो जाएगा जो कमजोर हो गया है (अपनी मां के लिए उसके शब्द के कारण)। इस प्रकार, एक वास्तविक युद्ध में, वह दो पक्षों के बीच दोलन करता रहेगा, जिससे दोनों पक्षों की पूरी सेना नष्ट हो जाएगी और अंततः केवल वह ही रहेगा। इसके बाद, कोई भी पक्ष विजयी नहीं होगा और वह अकेला जीवित रहेगा। इसलिए, कृष्ण दान में अपना सिर मांगकर युद्ध में भाग लेने से बचते हैं।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 9, September 2023 |

निष्कर्ष

और इस प्रकार से कलियुग देव श्री श्याम का शीश खाटू नगरी में अवतरित हुआ खाटू के राजा ने खाटू में बाबा श्याम का मंदिर बना कर उसमे वो शीश स्थापित किया जो आज बढ़ते कलयुग में हारे का सहारा बन रहा है यदि आपको बाबा के दर्शन का सौभाग्य मिले तो फाल्गुन शुक्ल पक्ष में खाटू में एक शानदार मेला भरता है आप उस मेले में जरुर से भाग ले ।

खाटूश्यामजी

खाटूश्यामजी का मन्दिर जो प्रसिद्ध मकराणा मार्बल से बना हुआ है कस्बे का सबसे महत्वपूर्ण आकर्षण है। खाटूश्यामजी को कलयुग के देवता माना जाता है।[9,10]

श्याम कुंड

मंदिर से कुछ दूरी पर ही पवित्र श्याम कुंड स्थित है। बाबा श्याम का शीश इसी जगह से प्राप्त हुआ था इस वजह से इस कुंड के पानी को बड़ा पवित्र माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि यह पानी पाताल लोक से आता है और जो भी व्यक्ति इस पानी से स्नान करता है उसके सभी पाप धुल जाते हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के लिए अलग-अलग कुंड बने हुए हैं। कुंड के पास में ही छोटे श्याम मंदिर के साथ-साथ अन्य कई मंदिर बने हुए हैं।[2]

श्याम बगीची

मन्दिर के पास में एक समृद्ध बाग है, जहाँ से देवता को समर्पित करने के लिए फूल प्राप्त किये जा सकते हैं।

गौरीशंकर मन्दिर

यहाँ शिव मन्दिर भी है, जो खाटू श्यामजी के मन्दिर के पास में ही है।[11,12]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "Thana CLG Members of Khatu Shyamji Thana". https://khatu-shyam.in/. मूल से 20 अक्तूबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 अक्तूबर 2013. ।
2. ↑ https://khatu-shyam.in/
3. "महाभारत के वो 10 पात्र जिन्हें जानते हैं बहुत कम लोग!". दैनिक भास्कर. २७ दिसम्बर २०१३. मूल से 28 दिसंबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 दिसंबर 2013.
4. परमेश्वरानंद, स्वामी (2001)। पुराणों का विश्वकोश शब्दकोश । सरूप एंड संस। पी। 155 . आईएसबीएन 978-81-7625-226-3.
5. ^ "{शीर्षक}" । मूल से 25 फरवरी 2013 को संग्रहीत । 17 जनवरी 2014 को लिया गया .
6. ^ "जानिए कौन हैं ये खाटू श्याम महाराज" । newstrend.news (हिंदी में)। न्यूज़ट्रेंड। 14 अक्टूबर 2018 । 3 मई 2020 को लिया गया .
7. ^ सन स्टाफ। "महाभारत काल में नेपाल, भाग 12" । www.harekrsna.com । 31 जुलाई 2022 को लिया गया ।
8. ^ "बाबा खाटू श्याम जी के बारे में: वह कौन हैं, उनकी कहानी और इतिहास - रुद्र केंद्र" । www.rudraksha-ratna.com । 31 जुलाई 2022 को लिया गया ।
9. ^ सन स्टाफ। "महाभारत काल में नेपाल, भाग 4" । www.harekrsna.com । 31 जुलाई 2022 को लिया गया ।
10. ^ अल्फ हिल्टेबीटेल (2009)। भारत के मौखिक और शास्त्रीय महाकाव्यों पर पुनर्विचार । शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस. पी। 431. आईएसबीएन 9780226340555. 5 मार्च 2016 को मूल से संग्रहीत । 28 अक्टूबर 2015 को लिया गया ।
11. ^ पटनायक, देवदत्त (2010)। जया: महाभारत का सचित्र पुनर्कथन । गुड़गांव, हरियाणा, भारत। आईएसबीएन 978-0-14-310425-4. ओसीएलसी 692288394 ।
12. ^ टीम, संपादकीय (4 अगस्त 2022)। "बाबा खाटू श्याम | खाटू श्याम: कलयुग के देव" । कल्पनाये . 5 अगस्त 2022 को मूल से संग्रहीत । 5 अगस्त 2022 को लिया गया ।

Impact Factor: 7.580

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com